MAHARASHTRA STATE COUNCIL OF EXAMINATION, PUNE

Government Commercial Certificate Examination

2 JULY, 2018

[Time : 11-30]

HINDI SHORTHAND

(100 Words Per Minute)

Marks : 100

(Time allowed for Transcription of (A) and (B) passages : 2 Hr.)

हिंदी लघुलेखन

[१०० शब्द प्रति मिनट]

अंक : १००

[कालावधि – [अ] और [ब] परिच्छेद के लिए २ घंटा]

[अ] [अंक : ४५ + ५ संकेताकृती के लिए]

मनुष्य को परिश्रम खूब करना चाहिए जिससे कि प्रकृति से जो हमें शक्ति प्राप्त होती है उसका पूर्ण उपयोग हो सके अन्यथा हमारे शरीर में / विकार उत्पन्न हो जाता है । परिश्रमों तथा सफलता का चौली दामन का साथ है । यह हो ही नहीं सकता कि परिश्रम किया // जाय और सफलता न मिले । यदि परिश्रम करने में सफलता न मिले तो यह समझ लेना चाहिए कि परिश्रम करने में कहीं अवश्य /// त्रुटि हो गयी है । अतः परिश्रम से ही सफलता प्राप्त होती है, बिना परिश्रम मनुष्य को कुछ भी नहीं मिल सकता है । विश्व में परिश्रम //१// से ही बड़े बड़े कार्य हो जाते है इतिहास के पन्ने पलट कर देखने से हमें ज्ञात होता है कि महानता तथा कीर्ति / प्राप्त करने वाले सम्राटों ने भी परिश्रम को अधिक महत्त्व दिया है । परिश्रम के बल पर ही सम्राट चन्द्रगुप्त की विजय पताका प्रत्येक // स्थान पर फहराई । परिश्रम से ही बाबर जैसा गुलाम बादशाह बन बैठा । परिश्रम से ही अंग्रेजों से विश्व के कई राष्ट्रों पर /// शासन किया ।

गांधी, तिलक, मार्क्स, टॉलस्टाय आदि महान व्यक्तियों का जीवन वृत्त भी स्वयं एक कहानी है । जवाहरलाल नेहरू तो इसके बहुत बड़े आदर्श //२// हैं जो परिश्रम करने में सानी नहीं रखते थे । अतः हम कह सकते है कि परिश्रम मनुष्य को महान बना देता है । परिश्रम / की उपेक्षा करना किसी भी दशा में उचित नहीं है क्योंकि परिश्रम सामान्य जीवन प्रगति का विराम है । श्रम तथा मेहनत में घनिष्ठ सम्बन्ध है । //

परिश्रम की उपदेयता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि बिना विश्राम किये न तो मानसिक विकास हो सकता है और न /// राष्ट्र की उन्नति ही । इससे मानसिक कुशलता और शारीरिक कुशलता दोनों ही घट जाती है । विश्व के अनेक साहित्य सृष्टीओं, //३// ने परिश्रम के साथ-साथ विश्राम की महत्ता का भी वर्णन किया है। हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध लेखक ने एक स्थान पर अपने लेख में / लिखा है विश्राम परिश्रम रुपसी का सुहाग है।

अत: जो विश्राम का आनन्द लेना चाहते है उन्हें प्रथमत: श्रम करना चाहिए क्योंकि बिना // श्रम विश्राम कैसा ? बिना चले थकान कैसी और बिना थकान के विश्राम कैसा ? अत: श्रम के बाद विश्राम और विश्राम के बाद श्रम /// ठीक वैसे ही अच्छा लगता है । जैसे नमकीन के बाद मीठा और मीठे के बाद नमकीन । परिश्रम से ही सब कुछ मिल सकता है । //४//

[दो मिनट का मध्यांतर]

[ब] **[अंक : ४५ + ५ संकेताकृती के लिए]**

सामान्य जीवन में भी हम देखते हैं कि जैसा कर्म करते हैं उसी प्रकार फल भी प्राप्त करते है । यदि हमारा कर्म बुरा होता है / तो उसका परिणाम सर्वदा बुरा होता है । भले ही कोई जबतक चोरी में पकड़ा नहीं जाता तब तक सुख की रोटी खा ले // किन्तु चोरी का परिणाम तो उसके पकड़े जाने पर कारागार की दीवारियों में प्राप्त होता है । अत: यदि पहले अच्छे /// फलदायक न भी हों तो भी हों तो भी परिणाम शुभकारी होते है । किसी भी रोगी को खीर ज्वर में भले ही क्षण भर के लिए प्रसन्न //१// बना दे परन्तु परिणाम में वह रोग की वृद्धी का कारण बनेगी । कडवी औषधि का घूंट पहले कष्टदायी तो अवश्य होगा परन्तु अन्त / में रोग मुक्त भी कर देगा । अत: कर्म की विडम्बना पर विचार करना आवश्यक नहीं है । बल्कि कर्म का करना आवश्यक है ।

कर्म सर्वदा // इच्छा (रूपी) पावक में आहुति बनकर आता है अत: श्रेष्ठ कर्म वह है जिसमें इच्छा की निवृत्ती रहती है अर्थात आसक्ति रहित कर्म ही /// श्रेयस्कर है । कर्म का हमारे जीवन पर व्यापक प्रभाव है । कर्म विहीत हमारा जीवन निष्क्रिय हो जाता है । हमको अपनी //२// शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियों के विकास के लिए कर्म आवश्यक है । कर्म के कारण ही जीवन की सारी सुविधाएँ जो आज प्राप्त हैं । एकत्र हुई है । विज्ञान कर्म का साक्षात प्रतीक है ।

सभी कार्य उद्योग करने से ही सिद्ध होते हैं, कोरे मनोरथ से सम्भव नहीं हो सकते // जिस प्रकार सोये हुए सिंह के मुख में अपने आप पशु प्रवेश नहीं करते । कहने का यह अर्थ है कि कर्म हमारे जीवन की उन्नति /// का महान साधन है । हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से किसी भी प्रकार से हम उन्नति नहीं कर सकते हैं अत: आवश्यक है //३// कि हम कर्म करें । इनके साथ ही साथ यदि हम और ध्यान दें तो हमें ज्ञात होगा कि कर्म के कारण ही हम जीवन / धारण करते हैं । यदि कर्म न होता तो हमारे लिए विभिन्न रूपों में उपलब्ध खाद्य सामग्री सम्भव नहीं होती और खाद्य सामग्री के अभाव में // हम भूखे मर जातें। यदि संसार में कर्म का महत्त्व न होता तो संसार का अस्तित्त्व ही समाप्त हो जाता । अत: कर्म का जीवन पर /// यह व्यापक और गहरा प्रभाव किसी भी अवस्था में उपेक्षणीय नहीं । जिस क्षण इसकी उपेक्षा होगी उसी क्षण हम समाप्त हो जायेगें । //४//